पटना विश्वविद्यालय
PATNA UNIVERSITY
Estd. 1917

SEMESTER –IV

EC-1

TOPIC- -

"Movement for Formation Of Jharkhand"

VOL-2

Vetted By:

प्रो. (डॉ) सुरेंद्र कुमार

विभागाध्यक्ष, इतिहास विभाग

पटना विश्वविद्यालय, पटना

सम्पर्क: 9835463960

डॉ राजेश कुमार

अतिथि शिक्षक, इतिहास विभाग

पटना विश्वविद्यालय, पटना

सम्पर्क 9430934482

झारखंड राज्य के निर्माण की पृष्ठभूमि तथा कारणों की चर्चा मैंने इससे संबंधित e-content,vol-1 में की थी । इस e-content में झारखंड राज्य के निर्माण के लिए किए गए आंदोलन के प्रमुख नेता तथा इसके विस्तार एवं झारखंड राज्य के निर्माण की प्रक्रिया की चर्चा की गई है।

जैसे कि मैंने खंड 1 में चर्चा की थी कि "भारत के रूर" कहे जाने वाले इस क्षेत्र के निवासी अपनी तत्कालीन अवस्था से खुश नहीं थे। यहां के लोग चाहते थे कि बिहार राज्य

से अलग कर इसे एक नए राज्य के रूप में मान्यता दे दिया जाए। इस उद्देश्य की प्राप्ति के लिए इन क्षेत्र के निवासियों ने एक लंबा संघर्ष किया तब कहीं जाकर 2000 इसवी में यह क्षेत्र झारखंड नाम से एक नया राज्य बन पाया।

झारखंड राज्य के निर्माण के लिए किए गए आंदोलन को समय-समय पर कई नेताओं ने नेतृत्व प्रदान किया। इन नेताओं में जे. बारथोलमन, जुलियस लकड़ा, पॉल दयाल, बंदी उरांव, ठेबले उरॉव, बोनीफेस लकड़ा, इग्निस बेक, थियोडोर सूरीन, जयपाल सिंह, विनोद बिहारी, शिबू सोरेन, निर्मल महतो इत्यादि का नाम विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं।

जहां तक झारखंड आंदोलन की शुरुआत एवं विस्तार की बात है तो कहा जा सकता है कि इसकी शुरुआत संगठित रूप से 1940 के दशक से हुई और इसमें तेजी 1990 के दशक में काफी आ गई। इस आंदोलन की नीव 1920 के दशक में चाईबासा निवासी जे.बारथोलमन ने रख दी थी। बारथोलमन विद्यार्थी परिषद के सदस्य के रूप में काम किया। रांची में विद्यार्थी परिषद संस्था के तहत झारखंड के आदिवासियों के सामाजिक तथा आर्थिक समस्याओं एवं उसके कल्याण के लिए कार्य करना शुरू किया। विद्यालय में जब इन्होंने शिक्षक के रूप में सेवा देना शुरू किया तब विद्यार्थी परिषद से इन्हें हटा दिया गया ।विद्यार्थी परिषद का नाम बदलकर "छोटा नागपुर उन्नति सभा: रख दिया गया। इस संस्था के प्रमुख नेता थे -जुलियस लकड़ा, पॉल दयाल, बंदी उरांव तथा टेबलेट उरॉव। कालातंर के वर्षों में पॉल दयाल तथा फैमिली उरांव भी इस संस्था से अलग हो गए और किसानों की एक अलग पार्टी बना ली जिसे "किसान सभा" का नाम दिया गया।ये सभी संस्थाएं शुरुआती दौर में आदिवासियों की स्थिति में सुधार लाकर उनमें एक नई चेतना पैदा करने की कोशिश की।

"विद्यार्थी परिषद," "छोटानागपुर उन्नति समाज"तथा "किसान सभा" के नेता एग्लिंकन, लूथरन तथा कुछ गैर आदिवासी ईसाई थे। कलांतर के वर्षों में कैथोलिक संप्रदाय के लोगों ने भी इस क्षेत्र के लोगों की सामाजिक, एवं आर्थिक विकास के उद्देश्य से छोटानागपुर में कैथोलिक सभा की स्थापना की । इसका मुख्यालय रांची में था, और उसके पहले अध्यक्ष बोनीफेस लकड़ा और सचिव इगनेस बेक थे। 1935 के भारत सरकार अधिनियम के अंतर्गत हुए चुनाव में कैथोलिक सभा के दोनों सदस्य विजयी रहे । जब 1937 में बिहार में कांग्रेस मंत्रिमंडल का गठन हुआ तब इस क्षेत्र के किसी भी कांग्रेसी नेता को बिहार मंत्रिमंडल में जगह नहीं दिया गया। इससे इस क्षेत्र के निवासियों में असंतोष उत्पन्न हुआ और उनके मन में एक अलग राज्य के निर्माण की भावना उत्पन्न हुई।

इस भावना से प्रेरित होकर :छोटा नागपुर उन्नति समाज" "कैथोलिक सभा" और "किसान सभा ने मिलकर एक अलग पार्टी का निर्माण किया, जिसे "छोटानागपुर आदिवासी महासभा" का नाम दिया गया। इस महासभा के अध्यक्ष थिओडोर सुरिन तथा सचिव पॉल दयाल को बनाया गया। इस पार्टी का उद्देश्य था- छोटानागपुर और संथाल परगना को मिलाकर एक अलग प्रांत का निर्माण करना। इस महासभा को एवं इसके उद्देश्य को ईसाई मिशनरियों, ब्रिटिश अधिकारियों, मुस्लिम लीग तथा बंगाल में बसे बंगालियों ने भी अपना समर्थन दिया।

1939 में जब जयपाल सिंह "छोटानागपुर आदिवासी समाज" का नेता बने तभी से झारखंड निर्माण आंदोलन संगठित रूप से संचालित होना शुरू हुआ। इसी वर्ष जिला बोर्ड के चुनाव में महासभा को सिंहभूम तथा रांची जिला में भारी सफलता मिली। इस खुशी में जूलियस तिग्गा ने "नीली रंगभूमि" से तथा "बिहारी बंदर नाचो" शीर्षक से दो लेख प्रकाशित किया।

महासभा की बढ़ती शक्ति को देखते हुए तत्कालीन बिहार सरकार (प्रधानमंत्री- डॉ श्री कृष्ण सिंह) ने महासभा में फूट डालने की कोशिश की। अंततः इसके विरोध में आदिवासियों ने "छोटानागपुर प्रोटेक्शन लीग" की स्थापना की। इस समय ठेबले उरॉव ने भी "सनातन आदिवासी महासभा" की स्थापना की।

1950 के जमशेदपुर अधिवेशन में महासभा ने भी अपने नीतियों में परिवर्तन का निर्णय लिया। अब कहा गया कि गैर आदिवासी भी इस महासंघ के सदस्य बन सकते हैं। अब महासभा का नाम "झारखंड पार्टी" रखा गया । 1950 के दशकों में "झारखंड पार्टी" बिहार में सबसे बड़ी विपक्षी दल की भूमिका में रहा लेकिन धीरे-धीरे विभिन्न कारणों से इसकी शक्ति भी कम होती जा रही थी। 1963 ईस्वी में जयपाल सिंह "झारखंड पार्टी"के अन्य सदस्यों से विचार विमर्श किए बिना कांग्रेस पार्टी में इसका विलय कर दिया। इसकी प्रतिक्रिया स्वरूप झारखंड में कई छोटे-मोटे झारखंड नामधारी जो आमतौर पर विभिन्न समुदायों का प्रतिनिधित्व करती थी, का उदय हुआ। इन दलों में विनोद बिहारी द्वारा 1967ईसवी मे गठित "शिवाजी समाज" 1969 में शिबू सोरेन द्वारा गठित "सोनत संथाल समाज" 1972 में विनोद बिहारी मेहता तथा शिबू सोरेन द्वारा गठित "झारखंड मुक…

इन दलों में जिसमें "झारखंड मुक्ति मोर्चा"का नाम विशेष रूप से उल्लेखनीय है, खदान और मिल मजदूरों को अपने साथ जोड़ने का काम किया । इसके अलावा इसने एक प्रभावशाली ढंग से गैर आदिवासी आबादी को भी अपने साथ किया जो अब तक झारखंड आंदोलन से पूरी तरह जुड़े नहीं थे । इससे झारखंड आंदोलन और अधिक शक्तिशाली बन गया। इसका ही परिणाम था कि 1977 ईस्वी तक आते-आते जनता सरकार के

समय क्षेत्र में क्रियाशील सभी दलों ने मतदाताओं को आकर्षित करने के लिए अपने अंदर झारखंड सेल गठित किया।

1990 के दशक में झारखंड आंदोलन अधिक शक्तिशाली होकर उभरा । मई 1991 को "झारखंड विकास परिषद" विधेयक को बिहार विधानसभा की मंजूरी मिली । मार्च, 1993 को "झारखंड विषयक समिति"(गठन 1987) की रिपोर्ट संसद में पेश की गई। मार्च, 1993 को "सर्वदलीय झारखंड संघर्ष समिति" ने मोराबादी मैदान, रांची में संकल्प लिया कि अब अलग राज्य से कम किसी भी अन्य मांग पर समझौता नहीं किया जाएगा। अगस्त,1995 को "अंतरिम झारखंड क्षेत्र स्वशासी परिषद" और "अंतरिम कार्यकारी परिषद" अस्तित्व में आई। जुलाई, 1997 के दिन "जैक" को महत्वपूर्ण अधिकार देने की घोषणा बिहार सरकार ने की। इसी माह 22 जुलाई को ही बिहार विधान मंडल में झारखंड को अलग राज्य के रूप में स्थापित करने का प्रस्ताव पारित कर दिया। अगस्त, 2000 को केंद्र सरकार ने बिहार राज्य पुनर्गठन विधेयक पारित कर दिया।11 अगस्त, को राज्यसभा की स्वीकृति मिली और 25 अगस्त को राष्ट्रपति की मंजूरी मिल गई ।1 नवंबर, 2000 को झारखंड राज्य के गठन की घोषणा कर दी गई। इसे बिहार से अलग एक अलग राज्य बना दिया गया।

प्रारंभिक असफलताओं के बावजूद झारखंड राज्य का निर्माण हुआ और भारत में 28वॉ राज्य का गठन हुआ।

Suggested book:

1-के. एल. शर्मा- "झारखंड मूवमेंट इन बिहार"।

2-के.एस. सिंह- "

"ट्राइवल मूवमेंटस इन इंडिया"।

3- एल.पी.विद्यार्थी और के.एन.सहाय- "डायनामिक्स ऑफ ट्राइबल लीडरशिप इन बिहार"।

4- नवीन चंद्र प्रसाद- "छोटा नागपुर में अलगाववादी आंदोलन" ।